जवाहिरात ए फकीर

पीर जुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

1. सबर और शुक्र करने वाला जन्नती
2. दिल कैसे साफ होता हे
3. अल्लाह की नाराज़गी की निशानी
4. नज़र और खबर का रास्ता
5. तीन ज़माने
6. इल्म और मालूमात में फर्क
7. अकल की ज़कात
8. मौत के बाद इन्सान के पांच हिस्से
9. बुरे लोगो की निशानी
10. शैतान के डाव से बचने का तरीका
11. रहमान का बसेरा
12. आजमाइश को खुश दिली से कुबूल कीजिये

इन मजमूनो को उर्दू किताब “जवाहिरात ए फकीर”, से लिप्यांतरण किया है.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. सबर और शुक्र करने वाला जन्नती

बीवी बहुत खूबसूरत थी और उसका शौहर बहुत ही बदसूरत चेहरा का और अनोखा, चेहरा काले रग, किसी तरह जिन्दगी गुजर रही थी. एक मोके पर शौहर ने बीवी की तरफ देखा तो मुस्कुराया और खुश हुवा, ये देख कर बीवी ने कहा हम दोनो जन्नती हे, उसने पूछा आपको कैसे पता चला, बीवी ने कहा जब आप मुजे देखते खुश होते हे शुक्र अदा करते हे, और जब मे आपको देखती हू तो सब्र करती हू, शरियत का हुकम हे सबर करने वाला भी जन्नती और शुक्र करने वाला भी जन्नती.

2. दिल कैसे साफ होता हे

इन्सान जब तौबा करता हे तो दिल की कालक दुर होती हे, दिल की अधेरी और उसकी सख्ती दुर होती हे, और जब इन्सान अल्लाह के सामने सर रख कर अपने गुनाहो से सच्ची पक्की तौबा करता हे तो अल्लाह दिल को धो देते हे, एक मरतबा हजरत ईब्राहीम(अल) को वही की गयी कि अपने दिल को धो लिया करो, आप केहने लगे ए अल्लाह पानी तो वहा पोहोचता

नही, मे उसको केसे धोउ, फरमाया ये दिल पानी से नही, ये तो मेरे सामने रोने से धुला करता हे, यानी अगर तु मेरे सामने अपने गुनाहो की माफी मागेगा, आजिजी करेगा और रोयेगा, तो इन आसुओ के गीरने से तेरे दिल को साफ कर दिया जायेगा.

3. अल्लाह की नाराज़गी की निशानी

अल्लाह की रहमत इन्सान की तरफ मुतवज्जेह होती हे उसकी पेहली निशानी ये हे कि इन्सान को अपने ऐब नज़र आने शुरु हो जाते हे, और जब अल्लाह नाराज होते हे तो उसकी पेहली निशानी ये हे के अपने ऐब अपनी नज़र से छुप जाते हे, इसलिये इन्सान अपने उपर नज़र डाले तो अपनी कोताहिया सामने होगी.

4. नज़र और खबर का रास्ता

आज का इन्सान अपनी देखी हुवी चीज़ो और अपने ताजरूबो पर अपनी जिन्दगी की बुनियाद रखता हे, इसको नज़र का रास्ता केहते हे, जबकि अल्लाह के हुकमो पर अपनी जिन्दगी की बुनियाद रखने को खबर का रास्ता केहते हे, जो नज़र के रास्ते पर चलेगा वो खड्डे मे गिर जायेगा, और जो खबर के रस्ते पर

चलेगा वो अल्लाह की जात से मिल जायेगा, आज हम नज़र के रास्ते पर चलते हे और केहते हे कि हमे वही करना हे जो हमारी समज़ मे आयेगा, अल्लाह का हुकम समज़ मे आये या ना आये हमे उसी पर अमल करना हे, और अगर अल्लाह के हुकम से हट कर हमे जाहिरी तौर पर अगर कामयाबी भी नज़र आती हो तो भी वो रास्ता नही इख्तियार करना चाहिये, जाहीर मे कामयाबी होगी लेकिन हकीकत मे नाकामी होगी, जिस तरह इन्सान खुद अधूरा हे, इसी तरह उसकी देखी हुवी चीजो और उसके तजरूबत भी अधूरे हे, इसी तरह इनके मुताबिक गुजरने वाली जिन्दगी भी अधुरी होगी, जिस तरह अल्लाह के अहकाम कामिल हे इसी तरह उसके मुताबिक गुजरने वाली जिन्दगी भी कामिल होगी.

5. तीन ज़माने

एक वो जमाना था जब लोग कुछ अमल करते थे और उसे छुपा लेते थे, फिर वो जमाना आया कि अमल करते थे और उसे बता देते थे, और आज वो जमाना हे कि अमल भी नही करते और बताते फिरते हे कि मेरा हज करने का इरादा हे, मदरसा बनाने का इरादा हे,

अभी जेहनो मे सोच होती हे और पहले ही से मशहूर कर देते हे, ताकि लोग उसका तजकिरा करे और हमारा नफस मोटा हो, हम नफस को पालने मे मशगुल हे, और नफस हमे जहन्नम मे धक्का देने मे मशगुल हे, हमारा क्या होगा.

6. इल्म और मालूमात में फर्क

एक मरतबा मुफ्ती शफी रह ने तलबा से पूछा इल्म किसे केहते हे किसी ने कहा जानना, किसी ने कहा पहचानना, किसी ने कुछ किसी ने कुछ कहा हजरत खामोश रहे, तलबा ने अर्ज किया हजरत आप ही बता दिज्ये, हजरत ने फरमाया इल्म वो नूर हे जिसके हासिल होने के बाद अमल किये बगेर चेन नही आता, कयुके तमाम खबरे जो इन्सान के दिमाग मे तो मौजुद हे मगर उन पर अमल नही हे, वो मालुमात कहलायेगी, इसलिये शरियत ने इल्मे नाफे मागने का हुकम दिया हे, हुजूर ﷺ दुवाए मागते थे, ए अल्लाह मुजे इल्मे नाफे अताफरमा, इल्मे नाफे वही होता हे जिसपर अमल किया जाये, और अगर सिर्फ मालुमात हो तो ये वबाल बन जती हे.

7. अकल की ज़कात

हजरत अबु बकर(रदी) फरमाते हे नादानो की बातो पर बरदाश्त इन्सान की अकल की जकात हुवा करती हे, पढे लिखे अकलमन्द लोगो को चाहिये कि छोटी छोटी बातो के उपर दिलो मे रोग ना पाल लिया करे, दुसरे की गलती को माफ कर देना और तकलीफ बरदाश्त कर लेना इन्सान की अकल की जकात हे, अगर अल्लाह ने अकलमन्द बनाया हे तो अकल की जकात भी दिया करो, मगर आजकल देखा जाता हे कि आदमी खुद तो चाहता हे कि मेरे बडे बडे कसूरो को माफ कर दिया जाये, मगर दुसरो की छोटी छोटी गलती को भी माफ करने को तय्यार नही होता.

8. मौत के बाद इन्सान के पांच हिस्से

उलमा ने लिखा हे कि मौत के बाद इन्सान के पांच हिस्से बन जाते हे, एक तो रूह जिसको मलेकुल मौत लेकर चला जाता हे, दुसरा इन्सान का जिस्म जो कीडे खा जाते हे, तीसरा उसका माल जो उसके वारिस ले जाते हे, चोथा उसकी हड्डीया जिनको मीट्टी खा जाती हे, पाचवा उसकी नेकीया जिनको उसके हकदार ले जाते हे, इसलिये अफसोस हे इस इन्सान पर कि

कयामत के दिन नेकीयो के ढेर लायेगा मगर अपनी बद-एहतियाती की वजह से नेकीया दे बेठेगा और गुनाहो के पहाड सर पर लेने पड जायेगे.

9. बुरे लोगो की निशानी

हजरत इबने अब्बास (रदी) से रिवायत हे हुजूर ﷺ ने एक मरतबा इरशाद फरमाया मे तुम्हे वो शख्स ना बतावु जो सब से ज्यादा बुरा हो, अर्ज किया गया, ए अल्लाह के नबी ﷺ जरूर बतलाये इरशाद फरमाया जो अकेला खाये और अपने गुलाम को मारे, अकेला खाने का मतलब ये हे कि मिल जुल कर रेहने की आदत ना हो और अपने हाथ निचे वालो पर सख्ती करने वाला हो, फिर उसके बाद फरमाया मे तुम्हे एक शख्स बतावु जो इस से बुरा हो, अर्ज किया गया, ए अल्लाह के नबी ﷺ वो भी बता दिज्ये, इरशाद फरमाया जो आदमी लोगो से दुश्मनी रखे और लोग उससे दुश्मनी रखे, ऐसा आदमी उससे भी बुरा हे, फिर फरमाया मे तुम्हे एक शख्स बतावु जो इस से भी ज्यादा बुरा हो, अर्ज किया गया, ए अल्लाह के नबी ﷺ वो भी बता दिज्ये, इरशाद फरमाया ऐसा बन्दा कि ना उससे नेकी की उम्मीद हो और ना उसकी बुरायी से लोगो को

अमन हो, फिर उसके बाद फरमाया मे तुम्हे एक और ऐसा बन्दा बतावु जो इस से भी ज्यादा बुरा हो, अर्ज किया गया, ए अल्लाह के नबी ﷺ कौन हे, फरमाया कि जो किसी की गलती को माफ ना करे और किसी भी बन्दे की माजीरत को कुबूल ना करे, ये मामला तो परवरदिगार ने अपने हाथ मे रखा हे, अगर इन्सानो के बस मे ये बात होती तो जीते जागते बन्दे को जहन्नम मे फेक देते.

10. शैतान के डाव से बचने का तरीका

शैतान के दाव से बचने के लिये हमारे पास सब से बडी चीज अल्लाह का जिक्र हे, अल्लाह का इरशाद हे तरजुमा- बेशक जो परहेजगार और मुत्तकी लोग हे जब शैतान की एक जमात उनके उपर हमला करने वाली होती हे तो वो अल्लाह को याद करते हे और अल्लाह उन्हे शैतान के हथकडो से मेहफूज कर लेते हे, अब्रहा ने जब अपने लश्कर के साथ बैतुल्लाह पर हमला करना चाहा तो अल्लाह ने अपने घर की हिफाजत के लिये अबाबीलो को भेज दिया, उन्होने कंकरिया बरसायी और अब्रहा के पूरे लश्कर का भूसा बना कर रख दिया, बिलकुल इसी तरह ये दिल भी अल्लाह का घर हे ए

बन्दे ये शैतान जब भी अब्रहा बनकर तेरे दिल के घर पर कब्जा करना चाहे तो तु लाइलाह ईल्लल्लाह पढकर ये वो कंकरिया बन जायेगी जो शैतान अब्रहा के लश्कर को बरबाद करके रख देगी.

11. रहमान का बसेरा

अल्लाह भी हेरान होते होगे, कि ए मेरे बन्दे मेने तेरी वजह से शैतान को तेरे घर यानी जन्नत से निकाल दिया, क्या तु मेरी वजह से शैतान को मेरे घर यानी अपने दिल से नही निकाल सकता? जब शैतान दिल से निकल जायेगा तो फिर उसमे रहमान का बसेरा होगा.

12. आजमाइश को खुश दिली से कुबूल कीजिये

अल्लाह फरमाते हे कि हम हर बन्दे को अजमायेगे ताकी खरे खोटे की पेहचान हो जाये, हमे चाहिये की हम अल्लाह से माफी मागते रहे, हम कमजोर हे अजमाइश के काबिल नही हे, लेकिन अगर कभी अल्लाह की तरफ से कोई अजमाइश आजाये तो घबराने की जरूरत नही, परवरदिगार जो बोज़ सर पर रखता हे तो फिर उसे उठाने की भी तौफीक अता फरमा देता हे, किसी की हिम्मत से ज्यादा उसपर

बोज़ नही डालता, क्या हम किसी छोटे से बच्चे के सर पर एक मन का बोज़ डालेगे? नही डालेगे, बलकी किसी बच्चे से वजन उठवाना भी हो तो पहले ये देखेगे कि ये बच्चा इतना वजन उठा भी सकेगा या नही, जब हम जेसे लोग भी इस बात को देखते हे कि इतना ज्यादा बोज़ बच्चे पर डालना मुनासिब नही हे, तो अल्लाह भी हिम्मत से ज्यादा बोज़ नही डालते, बलकी सच्ची बात ये हे कि सर पर बोज़ बाद मे डालते हे और उसे उठाने की हिम्मत पहले दे देते हे, इसलिये अगर कोई अजमाइश आभी जाये तो उसे खुश्दीली से कुबूल किजये, जमे रहीये, ये इम्तिहान पहले भी हुवे और आइन्दा भी होते रहेगे.